जल और पर्यावरण

पर्यावरण उस बिन अधूरा कहलाएगा।
मानव उस बिन तड़प-तड़प मर जाएगा।।
जिसका मूल्य नहीं कभी कोई दे पाएगा।
इसे ग्रहण करने के पश्चात ही मूल्य इसका कोई समझ पाएगा।।
आखिर इतनी महत्वपूर्ण यह वस्तु है क्या?
अब बताइए भी इसका नाम है क्या।।
जल, नीर, वारि, तोय, उदक, पानी।
चाहे जिस नाम से करें उसे संबोधित।।
इसी में है मानव जीवन निहित।
नहीं झूठ कतई, यह है सत्य सर्वविदित।।

जल आक्सीजन और हाईड्रोजन के सम्मिश्रण (निश्चित अनुपात) से बना तरल पदार्थ है। साफ, स्वच्छ और निर्मल जल ईश्वर ने मानव को प्रदान किया (मानव ही क्यों, सभी प्राणियों को) ताकि वह जिंदा रह सके, एवं पृथ्वी नामक हमारे ग्रह पर जीवन जारी रख सके। जिस प्रकार मानव जीवन हेतु वायु (आक्सीजन) जल भी नितांत आवश्यक है ठीक केवल मनुष्य के जीने के लिए ही नहीं, जल तो अनिवार्य है पेड़-पौधे, पशु-पक्षी के जीवित रहने के लिए। कहने का तात्पर्य यह है कि पृथ्वी पर बसने वाले हर प्राणी, हर जीव की मूलभूत आवश्यकता है जल। बहुत से प्राकृतिक चक्र, क्रियाएं भी जल ही पर निर्भर हैं। पर्यावरण के संबंध में भी जल बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। कभी-कभी मेरे मन में यह विचार उत्पन्न होता है कि हमारे ग्रह पर यदि जल न होता तो क्या होता। इस कल्पना मात्र से ही भीतर तक एक सिहरन सी दौड़ जाती है। सर्वप्रथम तो हाय ! अगर जल न होता तो हम इंसान, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि सभी प्यासे ही मर जाते। भूखे तो फिर भी कई दिनों तक रहा जा सकता है पर पानी के बिना एक पल भी रह पाना असंभव है। न जाने ऐसा क्या है इस प्राकृतिक तरल पदार्थ में।

अर्थशास्त्र के एक नियमानुसार जो वस्तु अधिक मात्रा में उपलब्ध होती है, उसकी कीमत उतनी ही कम होती है। अर्थशास्त्री माफ करें, पर पानी पर तो यह नियम कतई लागू नहीं होता। यह प्राकृतिक संपदा बहुतायत में बहुत मूल्यवान है। पानी की कीमत कोई नहीं आँक सकता, कोई नहीं दे सकता। इसकी कीमत का ज्ञान केवल प्यासे को हो सकता है। उससे पूछकर देखिए। पानी उसके लिए किसी अमृत से कम नहीं होगा। कहतें हैं कि जब ईश्वर ने मानव के लिए सृष्टि की रचना की, तो पेड़ पौधों, पशु-पक्षी, पर्वत, पठार, मैदान आदि बनाने के साथ साथ उसने उसके लिए एक जीवनदायी पेय प्रवाहित किया नदियों, सागरों, झीलों, झरनों, तालाबों में । यह जीवनदायी पेय था जल। ऐसा करने के पीछे ईश्वर का एक और अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य था-सभी प्रकार के जीवन के लिए एक स्वस्थ और संतुलित पर्यावरण बनाए रखना।

अब आप कहेंगे कि यह पर्यावरण किस चिड़िया का नाम है? संतुलित पर्यावरण क्या होता है ? तो सुनिए, पर्यावरण कहते हैं अपने आस - पास के वातावरण को जिसमें सम्मिलित हैं अनिवार्य रुप से मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे,

कु. यास्मीन इकबाल, महिला गवर्नमेन्ट कालिज, चंडीगढ़

वायु, जल, पर्वत आदि। इन सभी के सामंजस्य (एक दूसरे से आपसी तालमेल बनाए रखना, प्रकृति द्वारा निर्धारित अनुपात में रहना) को नाम दिया जाता है संतुलित पर्यावरण।

हमारे विस्तृत ब्रहमांड में अभी तक केवल पृथ्वी ही ठीक एकमात्र ऐसा ग्रह है जिसके पास पर्यावरण है। इसी पर्यावरण के कारण ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। वास्तव में क्या है कि हमारी सुंदर पृथ्वी को जल और वायु की एक पतली परत घेरे हुए है। पृथ्वी पर जीवन के लिए जल और वायु की यही परत जिम्मेदार है। अगर यह परत न होती तो हमारा ग्रह भी अन्य ग्रहों की तरह ही निर्जन, उजाड़, सनुसान, निर्जीव, निष्प्राण होकर सूर्य की परिक्रमा करता रहता, अंतरिक्ष के गहन तिमिर में विलीन रहता।

पर्यावरण की परिभाषा जानने, समझने के पश्चात् अब अगर यह कहा जाए कि जल और पर्यावरण दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी । बिना जल के पर्यावरण कुछ नहीं और बिना पर्यावरण के जल बेकार है, व्यर्थ है। तात्पर्य यह है कि पर्यावरण और जल का संबंध नाता बहुत गहरा है। एक को कुछ हुआ तो दूसरा प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। प्राकृतिक चक्र की प्रत्येक आवश्यक कड़ी में से एक महत्वपूर्ण कड़ी जल भी है या यूं कहें कि जल पर्यावरण का एक अनिवार्य अंग है, एक महत्वपूर्ण अंश है।

आइए, अब जल और पर्यावरण के संबंध में विस्तारपूर्वक विचार करें। पृथ्वी का 70 प्रतिशत भाग जल है। दूसरे शब्दों में -पृथ्वी की सतह के लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा समुद्रों ने लिया हुआ है। ये समुद्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। संसार के संपूर्ण जल का 97 प्रतिशत भाग समुद्रों में हैं। 2 प्रतिशत जल नदियों, झीलों, तालाबों आदि में है और शेष बचा हुआ एक प्रतिशत जल बर्फ की चट्टानों एवं हिमनदियों में बर्फ के रुप में कैद है। (केवल यही जल ताजा और स्वच्छ माना जाता है)।

पृथ्वी पर जल की उपस्थिति से ही भांति-भांति के असंख्य जीव-जंतुओं (जलचर) का अनमोल भंडार आज हमारे पास है, हमारी राष्ट्रीय निधि है। अनेक प्रजातियों के सूक्ष्म से सूक्ष्म, बड़े से बड़े, सुंदर से सुंदर, भद्दे से भद्दे प्राणी अर्थात कि विभिन्न किस्मों के जीव समुंदरों, नदियों, झीलों आदि में रहते हैं और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में अपना-अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन जलचरों के धरती पर विद्यमान होने (और जलीय संसार को सजाने, पर सबसे जरुरी, पर्यावरण को संभालने) का सारा श्रेय जल को ही जाता है। अगर जल न होता तो हम इस मूल्यवान प्राकृतिक संपदा के सुख और फायदों से वंचित रह जाते। कहा जाता है (बल्कि वैज्ञानिकों, शोध कर्ताओं ने तो यह सिद्ध भी किया है) कि पृथ्वी पर जीवन का आरंभ जल ही से हुआ था। जीवन के रुप थे सूक्ष्म, जलीय जीव। फिर धीरे-धीरे, जल के साथ-साथ जटिल किस्म के जीवों के रुप में जीवन थल पर भी आ गया।

पर्यावरण और जल की बात चली है और जल चक्र का उल्लेख न हो ये भला कैसे हो सकता है? इसके बिना तो यह लेख अधूरा प्रतीत होगा। वास्तव में होता यह है कि सूर्य की गर्मी के कारण धरती की सतह पर से एवं पेड़ पौधों से पानी भाप बनकर हवा में उड़ जाता है। यह वाष्प हवा में जाकर ठंडी हो जाती है और तत्पश्चात पानी की छोटी-छोटी बूंदो का रुप धारण कर लेती हैं। यह बूंदें पुनः एकत्रित होकर बादल बनती हैं। फिर ये बादल बरसकर धरती को उसका जल लौटा देते हैं। वर्षा होने से नदियों को जल प्राप्त होता है, किसान को सिंचाई हेतु पानी मिलता है। जल चक्र से संबंधित एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि वर्षा होने से पानी जब धरती पर गिरता है तो पेड़-पौधों की जड़ें उसे सोख लेती हैं और इस तरह बढ़ता है जमीन के नीचे का जल स्तर। फिर यही जल स्रोत बनता है कुंओं के पानी का, झरनों का चश्मों का । यहां से फिर आदमी और अन्य जीव जंतु जल संबधी अपनी आवश्यकताएं (मानव के लिए जैसे पीना,

नहाना, धोना, भोजन पकाना, काम धंधों में उपयोग करने के लिए) पूरी करते हैं। यह खेल (मेरा मतलब कि चक्र) यहीं समाप्त नहीं होता। जल फिर रवि की गर्मी पाकर, भाप बनकर हवा में उड़ जाता है पुनः मेघ बनते हैं और बरस जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जल चक्र बार बार दोहराया जाता है। यहां मैं एक तथ्य को उजागर करना चाहूंगी और वह यह है कि यह प्राकृतिक जल चक्र सृष्टि के आरंभ से ही चल रहा है और यूं ही चलता रहेगा (अगर उन्नति के पथ पर अंधाधुंध, बेतहाशा दौड़ते मानव ने, पर्यावरण से खिलवाड़ ना किया। इस जल चक्र द्वारा जल स्वयं को निश्चित अनुपात में रखता है और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखता है। इस जल चक्र की उपयोगिता से एक और बात साबित होती है कि प्रकृति स्वयं ही हर पल कार्यरत रहती है एक स्वस्थ् संतुलित पर्यावरण बनाए रखने के लिए। मतलब ये कि प्रकृति हर चीज को पुनः उसके स्थान पर स्थापित कर देती है। वह ऐसा इसलिए करती है कि प्राकृतिक संतुलन हर हालत में बना रहे, मनुष्य और अन्य प्रणियों की भलाई हेतु पर्यावरण सुरक्षित रहे। वह प्रकृति, तुम्हारी समझ-बूझ, सुशीलता के क्या कहने। एक तरफ तुम हो तो दूसरी तरफ है, ये दो पैर का जानवर (मेरा मतलब आदमी से है) जो सदैव लेना ही जानता है, देना नहीं, प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करना ही जानता है, उन्हें लौटाना या सोचसमझ कर इस्तेमाल करना नहीं जानता।

जल और पर्यावरण संबंधी एक और महत्वपूर्ण पहलू भी है। धरती पर जितने भी पेड़-पौधे हैं, वनस्पतियां हैं, उन सभी के लिए जल इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसमें घुलने के पश्चात ही वे खाद्य पदार्थ (पोषक तत्व अर्थात् प्राकृतिक अथवा रासायनिक खाद आदि) ग्रहण कर पाते है और फलते-फूलते हैं। अगर जल न होता तो यह पेड़ -पौधे भी नहीं होते। अब जब पेड़-पौधे नहीं होते तो वर्षा भी नहीं होती (याद है जल चक्र में पेड़-पौधे वर्षा की क्रिया के होने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं)। वर्षा के न होने से भूमि के नीचे का जल स्तर गिरता और क्या मालूम शून्य भी हो जाता हो । वर्षा न होने से सूखा और अकाल पड़ता है। हां, एक और बात, पेड़-पौधें न होते तो उनमे बसने वाले इतनी तरह-तरह के पशु-पक्षी भी कहां होते? अब ऐसी स्थिति में जरा सोचिए कि पर्यावरण का क्या हाल होता। जाना आपने, कि जल पर कितनी ही प्राकृतिक क्रियाएं (जो एक स्वस्थ, संतुलित पर्यावरण हेतु बहुत आवश्यक हैं) आश्रित हैं।

पर्वत भी जल और पर्यावरण के तालमेल को बनाए रखने में अपनी तरह से सहायक सिद्ध होते हैं। पर्वतों की चोटियों पर जमी बर्फ पिघलने से अनेक नदियों को जल प्राप्त होता है। ऐसी नदियां सारे वर्ष पानी से भरी रहती हैं जिसका उपयोग किसान सिंचाई के लिए करता है (फिर वह वर्षा पर इतना निर्भर नहीं करता। वर्षा का क्या, कभी होती हैं, कभी नहीं) और अपने खेतों में सोना पैदा करता है अर्थात भरपूर फसलें उगाता है, रिकार्ड तोड़ अन्न उत्पादन करता है। सारा साल बहने वाली इन नदियों पर बॉध बनाकर विद्युत उत्पन्न की जाती है। बॉध बनाने का एक सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इससे वर्षा का जल व्यर्थ में नहीं बहने दिया जाता और साथ ही बाढ़ आने के खतरे को भी बहुत हद तक रोका जा सकता है। बॉध बॉधने से नदी से सिंचाई हेतु नहरें भी सरलता से निकाली जा सकती हैं। इन नहरों के माध्यम से मत्स्य पालन उद्योग को भी बढ़ावा दिया जा सकता है। जल यातायात अन्य वस्तुओं के आयात निर्यात को भी सुलभ बनाता है।

जल हमारी भूमि को भी उपजाऊ बनता है, उसकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि करता है। जानते हो कैसे? वो ऐसे कि पर्वतों से आरंभ होकर मैदानों तक के अपने सफर के अंतर्गत नदियां अपने संग (मतलब जल के साथ) उपजाऊ मिट्टी भी बहाकर लाती है। जब ये नदियां मैदानों से गुजरती है तब ये उपजाऊ मिट्टी यहीं ठहर जातीं है और वहां की जमीन को और बेहतर बनाती है।

तो साहब अब तक तो यह तथ्य बखूबी आपकी समझ में आ गया होगा कि जल किस तरह अनेक तरीकों से

पर्यावरण को संतुलित रखने में अपना अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देता है। आपने यह भी जान लिया होगा कि जल कितना आवश्यक है पर्यावरण के लिए और पर्यावरण हर प्राणी के लिए (विशेषतः मानव जाति के लिए)।

पर अफसोस। वर्तमान परिस्थितियों को देखकर बहुत दुख होता है, चिंता होती है भविष्य की। आज हालात इतने बुरे हैं तो फिर कल कैसा होगा? औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण की पागल धुन में नासमझ मनुष्य ने इस जीवनदायी अनमोल पेय जल को अपने स्वार्थ, अपनी सुविधा के लिए इस हद तक प्रदूषित कर दिया है, और कर रहा है कि अब हमारे सामने है, असंतुलित पर्यावरण, जिसका बुरा प्रभाव मनुष्य ही नहीं हर जीव जंतु पर हो रहा है। गलती मानव की, पर भुगतना सभी को पड़ रहा है। सच में, धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिए जल प्रदूषण खतरे की घंटियां बजा रहा है।

अब सवाल यह उठता है कि प्रदूषण किसे कहते हैं (तत्पश्चात जल प्रदूषण पर पहुंचेंगे)। पर्यावरण की उपज है- मानव अर्थात पर्यावरण की परिस्थितियां मानव जीवन को व्यापक रुप से प्रभावित करती है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले समस्त प्राणी अपने जीवन क्रमों को सुचारु रुप से संचालित करने के लिए संतुलित पर्यावरण पर निर्भर रहते हैं। संतुलित पर्यावरण में सभी तत्व एक निश्चित अनुपात में विद्यमान होते हैं। किन्तु जब पर्यावरण में निहित एक या उससे अधिक तत्वों की मात्रा अपने निश्चित अनुपात से बढ़ जाती है, या पर्यावरण में जहरीले, अनावश्यक तत्वों का समावेश हो जाता है, तो वह पर्यावरण सभी प्राणियों के जीवन के लिए घातक बन जाता है। पर्यावरण में होने वाले इसी घातक, विषैले परिवर्तन को ही प्रदूषण कहा जाता है। प्रदूषण के कई प्रकारों में से एक है- जल प्रदूषण। जल में अनेक कार्बनिक, अकार्बनिक पदार्थ, खनिज तत्व व गैसें घुली होती हैं। यदि इन तत्वों की मात्रा आवश्यकता से अधिक बढ़ जाए तो जल हानिकारक हो जाता है और तब उसे हम प्रदूषित जल कहते हैं। प्रदूषित जल कई प्रकार से पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित करता है।

जल प्रदूषण अनेक कारणों से हो सकता है परन्तु सबसे बड़ा कारण है आदमी और उसके गलत, अप्राकृतक क्रिया-कलाप। आज मानव द्वारा स्थापित औद्योगिक इकाईयां अपने उत्पादन के पश्चात सैंकड़ों टन निष्कासित, वर्जित, हानिकारक, विषैले, रासायनिक पदार्थ नदियों में प्रवाहित कर उनके जल को प्रदूषित करती हैं। हमारी नदियां इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, विशेष तौर पर गंगा। उनके ऐसा करने से उनके अपने अस्तित्व के लिए कितना बड़ा खतरा उत्पन्न हो सकता है, ये शायद वे अधिकाधिक लाभ कमाने के चक्कर में बिल्कुल ही भुला बैठे हैं। पर्यावरण को तो नुक्सान पहुंचता ही है, साथ ही मनुष्य का भी भला तो नहीं होता। केवल उद्योग का ही नहीं, बल्कि घरेलू कूड़ा करकट भी (बहुत अधिक मात्रा में) नियमित रुप से नदियों में बहा दिया जाता है। यही नहीं, मुर्दे, अधजली लाशें आदि भी नदियों के हवाले कर दी जाती हैं और क्रिया क्रम पर होने वाले व्यय से बचा जाता है । नासमझ मानव ये नहीं जानता कि में उसके इस कार्य के लिए उसे कितना भारी दाम चुकाना पड़ सकता है।

कीटनाशक पदार्थ व रासायनिक खाद के प्रयोग से भी जल प्रदूषण होता है। किसान फसल में वृद्धि करने के उद्देश्य से कीटनाशकों और रासायनिक खादों का प्रयोग सही जानकारी न होने के कारण निर्धारित मात्रा से अधिक करता है। वर्षा होने पर खेत में भरे पानी के साथ बहकर ये रसायन नदियों के पानी में जाकर मिल जाते हैं और उसे दूषित विषैला बना देते हैं। ऐसे रसायनों में एक्मलाई सिगला, फालमोनला आदि हैं। इसके अतिरिक्त नदियों में कैंसर पैदा करने वाले रसायन, मट्रोजिन्स, मासी मोजन्स आदि भी पाएं जाते हैं। गंगा के विषय में तो यह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और शोध कर्ताओं ने सिद्ध भी कर दिया है।

नदियो में आदमी और जानवरों का नहाना, धोना, उनके तटों पर मल मूत्र त्यागना आदि भी जल को प्रदूषित

करता है आज नगरों के विकास के साथ पुराने ढंग की शौच व्यवस्था में अंतर आ गया है। पहले खुले मैदानों और खेतों मे मल मूत्र के त्याग से भूमि को खाद के तत्व प्राप्त हो जाते थे। परन्तु अब नगरों में सीवेज प्रणाली चालू होने से प्राकृतिक प्रक्रिया में बड़ा असंतुलन उत्पन्न हो गया है। इस प्रकार का मैला जब किसी स्थान पर जाता है तो वहां की वनस्पतियों को दूषित कर देता है। ये वनस्पतियां फिर मनुष्य या पशुओं के उपयोग में आकर उन्हें हानि पहुंचाती हैं क्योकि सीवेज के पानी में नाईट्रेट और फास्फोरस के रासायनिक पदार्थ भारी मात्रा में उत्पन्न हो जाते हैं जो सामान्य जल को भी प्रदूषित कर देते हैं।

इस प्रकार मनुष्य की लापरवाही और स्वार्थ भावना के कारण जल प्रदूषण की समस्या दिन प्रतिदिन विकट होती जा रही है और इसके गंभीर परिणाम हमारे सामने हैं। जल दूषित होने से सर्वप्रथम तो उसमें रहने वाले जीव जन्तुओं की जान शिकंजे में आती है। जल में हानिकारक तत्वों के होने से प्रतिदिन न जाने कितने ही निर्दोष प्राणी अपने प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। अपनी ही गलतियों से हम अनेक जीवों की प्रजातियां समाप्त कर बैठे हैं अथवा उन्हें समाप्ति के कगार पर पहुंचा रहे हैं। दूषित जल के वर्जित हानिकारक पदार्थों को मछलियां अनजाने में ग्रहण कर लेती हैं। इन मछलियों को खाने पर मनुष्य विभिन्न प्रकार के रोगों का शिकार हो जाता है, यहां तक कि मर भी सकता है। दूषित जल के उपयोग से पीलिया, आंतों के रोग व अन्य संक्रामक रोग हो सकते हैं। दूसरा, गंदे जल से सिंचित होने पर फसलें वनस्पतियां नष्ट हो जाती हैं। फल-फूल, सब्जियां, अनाज आदि के माध्यम से रासायनिक विषैले तत्व मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और उसे बहुत कष्ट पहुंचाते हैं। तो इस प्रकार पर्यावरण के एक बहुत महत्वपूर्ण अंश, जल को दूषित कर मनुष्य अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहा है।

जल और पर्यावरण से खिलवाड़ मानव एक और ढंग से भी कर रहा है। इक्कीसवी सदी के कगार पर खड़े आज हम जिस रफतार से जल जैसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन का दुरुपयोग कर रहें हैं उदाहरणतः (नहाने के लिए बेवजह पानी उडेलते रहना, बाल्टी भरने के पश्चात भी नल चालू रखना, सार्वजनिक टूटियों से पानी पीकर उन्हें खुली छोड़ देना आदि, हमारी इन ही गलतियों से न जाने किन्तु पानी व्यर्थ होता है) उसके आधार पर यह कहना बिल्कुल गलत न होगा कि इक्कीसवीं सदी में या कहें कि निकट भविष्य में हमें पानी की बहुत किल्लत उठानी पड़ेगी । भारत में तो अभी से बहुत से लोग इस परेशानी का सामना कर रहे हैं। राजस्थान के लोगों की जरा जाकर हालत देखिए एक घड़े पानी के लिए उन्हें मीलों कड़ी धूप में चलना पड़ता है, सूखे कुओं बावड़ियों का मुंह देखना पड़ता है। पानी के इस दुरुपयोग से अव्वल तो आदमी हरियाली बिल्कुल ही खत्म कर देगा, भाग्य से जो थोड़े बहुत पेड़-पौधे बचेंगे, वो भी बेचारे पानी की कमी के कारण मर जाएंगे। पानी नहीं होगा तो जलचर भी नहीं होंगे। पर्यावरण पर इस सबका कितना भयानक प्रभाव पड़ेगा यह तो वक्त ही दिखलाएगा। पर इतना तो मैं निश्चित रुप से कह सकती हूं कि पानी की कमी से वनस्पतियां नहीं होगीं (फिर क्या खाएंगे प्राणी ?) पेड़ पौधें नहीं होंगे, पृथ्वी के नीचे का जल स्तर गिर जाएगा अथवा बिल्कुल ही समाप्त भी हो सकता है, वर्षा नहीं होगी, (क्योकि पेड़ पौधों और जल की अनुपस्थिति में जल चक्र कैसे चलेगा) सूखा पड़ेगा तथा और भी बहुत से भयंकर परिणाम मानव जाति को भुगतने पड़ेंगे। फलस्वरुप धरती पर जीवन के अस्तित्व को ग्रहण लग जाएगा, पृथ्वी निर्जीव हो जाएगी।

मैं मानती हूं कि औरों के मुकाबले मेरा भारत अभी भी पिछड़ा हुआ है। यहां की आधी से ज्यादा जनसंख्या अनपढ़ है, निरक्षर है। 70 प्रतिशत जनता गरीबी की रेखा से नीचे रहती है जिसकी सारी जिंदगी दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करने में ही व्यतीत हो जाती है। ऐसे लोग पर्यावरण शब्द से ही अनभिज्ञ हैं, फिर इसके फायदों और इससे होने वाले नुकसानों की जानकारी तो बहुत दूर की बात है। पर विश्व के अन्य देश जो विकसित हैं, जिनकी जनता पढ़ी लिखी है, साक्षर है, जानती है कि पर्यावरण क्या है, इसे वे कैसे हानि पहुंचा रहे हैं, वे देश आज क्या कर रहे है? वे प्रतिदिन

टनों कूड़ा करकट महासागरों के हवाले करते हैं, जल को दूषित करते हैं। फलस्वरूप महासागर, सागर सब खत्म होते जा रहे हैं, दम तोड़ रहे हैं और साथ ही दम तोड़ रहे है उनमें बसने वाले प्राणी, जीव जन्तु और बेचारा पर्यावरण विवश है मनुष्य के कारण धीरे धीरे अस्वस्थ, असुरक्षित और असंतुलित होने के लिए । इसलिए अपने एक आवश्यक अंग को प्रदूषित होता देखकर पर्यावरण भी दम तोड़ने लगा है।

अरे, पर्यावरण तो सभी का है। इसके असंतुलन से नुकसान भी सभी को होगा और इसके संतुलन से फायदा भी। ये कुछ न सोचते हुए जरा निम्नलिखित उदाहरण में विदेशियों का व्यवहार देखिए। उदयपुर में एक कंपनी ने रंगाई की फैक्ट्री खोली। पूर्वी भारत में इसकी रंगाई तकनीक पर प्रतिबंध लगा दिया गया क्योंकि इससे जल संसाधन प्रदूषित हो रहे थे। कई गाँवों की जमीन के नीचे का जल विषैला हो गया और लोग अपने जीविकोपार्जन के साधन खो बैठे। तत्पश्चातद्व इस फैक्ट्री को बंद करा दिया गया। यह उदाहरण साबित करता है कि विदेशी निवेशियों को मेजबान देश के पर्यावरण से कई सरोकार नहीं।

जल प्रदूषण की समस्या का समाधान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की अनेक संस्थाओं ने कई उपाए किए हैं जिसके आशाजनक परिणाम अभी तो हमारे सामने नहीं आए हैं। निकट भविष्य में भी वर्तमान समय में मनुष्य की विकास गति, जनसंख्या वृद्धि औद्योगिकीकरण, वनों के विनाश आदि को देखकर जल प्रदूषण की समस्या के निराकरण और पर्यावरण की शुद्रता के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं।

औरों को छोड़िए, पहले अपने भारत की बात करिए । भारत सरकार ने जल और पर्यावरण की प्रदूषण की रोकथाम के लिए आज तक क्या किया है? अब ऐसा भी नहीं है कि कुछ नहीं किया गया। पर्यावरण को बचाने हेतु, जल को बचाने हेतु सरकार नियम कानून बनाती है, जैसे कि जल प्रदूषण रोकथाम कानून 1974। पर इनका क्या लाभ ? ये केवल सरकारी कागजों पर ही रह जाते हैं। इन्हें वास्तविक रुप देने में सरकार स्वयं को असमर्थ अनुभव करती है। इसके पीछे कारण है: वित्तीय स्थिति कमजोर होना, लापरवाह और अप्रशिक्षित किस्म के अफसरों, कर्मचारियों का होना, जनता का असहयोग आदि। इतनी विपरीत परिस्थितियों के होने पर भी ऐसा तो नहीं है कि हमारी सरकार पर्यावरण की ओर से आँखें मूंदे आने वाले खतरों से अपरिचित, सोई हुई है। भारत जैसे हमारे निर्धन देश में सरकार ने जल प्रदूषण के निराकरण के लिए अनेक उपाय किए हैं। इनमें विशेष तौर पर उल्लेखनीय है 1986 में भारत सरकार द्वारा चलाया गया गंगा सफाई कार्यक्रम । इसके अंतर्गत अनेक जल सफाई यंत्रों ने वाराणसी, पटना, इलाहाबाद, आदि में अपना कार्य बड़े जोर शोर से प्रारंभ किया। केन्द्रीय जन स्वास्थ्य इंजीनियरी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने जल प्रदूषण को काबू में करने के लिए अनेक बहुमूल्य सुझाव दिए हैं। आश्चर्य इन पर अमल भी किया जा रहा है । कारखानों और खानों में प्रदूषण रोकने के उपायों की खोज में औद्योगिक विष विज्ञान संस्थान, लखनऊ और राष्ट्रीय विष संस्थान, अहमदाबाद विशेष रुप से प्रयत्नशील है। 1988 के आरंभ में केन्द्र सरकार के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने प्रदूषण फैला रही फैक्टरियों की सूचि तैयार की। फिर भारत सरकार ने राज्य सरकारों को स्पष्ट कड़े निर्देश दिए कि प्रदूषण फैला रही फैक्ट्रियों में ट्रीटमेंट प्लांट लगवाए जाएं। फिर प्रदेश सरकारों ने इन फैक्टियों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए उन्हें एक माह के भीतर ट्रीटमैंट प्लांट लगाने के निर्देश जारी किए। ऐसा न करने की अवस्था में उनपर जुर्माना लगाने के आदेश हुए। इस सबसे लगता है कि देश में जल प्रदूषण रोकने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के उद्‌देश्य से भारत सरकार युद्ध स्तर पर प्रयत्न कर रही है।

सरकार ही नहीं अब तो धीरे-धीरे आम जनता भी जल और पर्यावरण की हालत सुधारने के लिए (तात्पर्य यह कि अपना भविष्य सुरक्षित करने के लिए) ठोस कदम उठाने लगी है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है हमारा होटल

उद्योग। प्रदूषित जल को साफ करने की तकनीकों अपनाना, यंत्र लगाना आदि पहले पहल तो मंहगा सौदा लगता है पर लंबी दौड़ में निश्चित रुप से लाभदायक सिद्ध होता है। इसी सच्चाई को आज कई बड़े बडे होटलों ने समझा है जिनमें प्रमुख हैं, कार्लटन (कोडाईकनाल), वैलकमग्रुप, ताज, ओबराय आदि । इन सभी होटलों ने अपने दूषित जल को साफ कर पुनः उपयोग में लाने के कार्यक्रम को अपनाया है। होटल कार्लटन ने तो 12 लाख की लागत से अपने यहां एक जल सफाई यंत्र स्थापित किया। इसकी सहायता से साफ किया हुआ जल फिर से इस्तेमाल में लाया जाता है। होटल के रसोई घर का निष्कासित पानी बाग बगीचों को सींचने के उपयोग में लाया जाता है। इस तकनीक से होटल को लाभ तो हुआ ही है, साथ ही उसकी प्रतिष्ठा पर्यावरण मित्र के रुप में भी बढ़ी है। इस प्रकार आज हर छोटा मोटा उद्योग भी जल को प्रदूषण से सुरक्षित रखने के लिए अपने-अपने ढंग से उपाय कर रहा है। साधारण जन अब जल और पर्यावरण की उपयोगिता समझने लगे हैं।

परन्तु अभी भी जल और पर्यावरण के संरक्षण हेतु बहुत कुछ करना शेष है। सरकार को जल और पर्यावरण की सुरक्षा एवं जल प्रदूषण की रोकथाम हेतु नियम कानून सख्ती से लागू करने चाहिए। इन्हें तोड़ने वालों को कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए। इन नियमों को वास्तविक रुप देने के लिए मेहनती, ईमानदार और प्रशिक्षित अफसर और कर्मचारी नियुक्त किए जाने चाहिए। अधिक से अधिक वर्षा पाने और जमीन के नीचे का जल स्तर बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण के कार्यक्रम को देश के कोने-कोने तक पहुंचाया जाए। अधिकाधिक जनता को इस कार्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। उनके द्वारा असंख्य नए वृक्ष लगाए जाने चाहिए और साथ ही पुरानों की देखभाल भी करवाई जानी चाहिए। प्रत्येक जन को जल और पर्यावरण की उपयोगिता और आवश्यकता के विषय में अवगत कराया जाना चाहिए। जिससे वे अपने कामों, आदतों को पर्यावरण स्नेही बना सकें। उन्हें जल प्रदूषण और असंतुलित पर्यावरण के बारे में भी पूरी जानकारी देनी चाहिए। वनों के कटाव पर सरकार को कड़ा प्रतिबंध लगाना चाहिए और लोगों को स्वयं ही इसके गंभीर परिणामों के बारे में विचार करते हुए पेड़ कतई नहीं काटने चाहिए। पेय जल की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जनता को जल सोच समझकर उपयोग करना चाहिए क्योकि आने वाले समय में इसकी बहुत कमी होगी और फिर प्रकृति भी तो इतनी जल्दी हमारे द्वारा किए गए नुकसानों की भरपाई नहीं कर सकती। जल को व्यर्थ बहने से रोकने के लिए बाँध बनाए जाने चाहिए। नदियों के किनारे पेड़ लगाए जाने चाहिए ताकि उनकी जड़ें उपजाऊ मिट्टी (भूमि की ऊपरी उपजाऊ परत) को पकडे रहें, बहने न दे।

सार्वजनिक जल आपूर्ति और दूषित जल के निष्कासन की महत्ता से हमारे पूर्वज भी अनभिज्ञ नहीं थे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है खुदाई के दौरान मिले हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यताओं के अवशेष। इसलिए उनसे कुछ सीखते हुए हमें भी बस्ती व नगरों के दूषित वर्जित जल के निष्कासन के लिए सुदूर स्थानों पर समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। जहां तक हो सके दूषित जल को स्वच्छ बनाकर पुनः उपयोग करना चाहिए ताकि जल जैसे बहुमूल्य और सीमित प्राकृतिक पदार्थ को भविष्य के लिए बचाया जा सके कल के लिए और पर्यावरण को भी थोड़ी चैन की साँस आ सके।

अन्त में मैं यह कहना चाहूंगी कि अभी भी कुछ वक्त है बाकी, बिगड़ी स्थिति अभी भी संभाली जा सकती है (वो कहते हैं न कि जब आँख खुली तब सवेरा)। आवश्यकता है व्यक्तिगत तौर पर (अकेली सरकार के करने से कुछ नहीं होगा) पर्यावरण के प्रति (अर्थात अपनी सुरक्षा के प्रति) अपना कर्तव्य पहचानने की, निभाने की। क्या हम अपने जीने के तौर तरीकों पर कभी ध्यान देते हैं कि वो पर्यावरण स्नेही हैं या नही? अगर हम ऐसा नहीं करते तो फिर औरों से ऐसा करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? दोषी एक नहीं, सभी हैं। पर इस दोष को अभी भी सुधारा जा सकता है। अगर मनुष्य अपनी नस्ल, अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखना चाहता है, पृथ्वी पर जीवन, जीवन के लक्षण बने रहने देना चाहता है तो इससे पहले कि और देर हो जाए, समय रहते (मै तो कहूंगी कि इसी पल से) उसे जल संरक्षण, जल प्रदूषण

रोकथाम, पर्यावरण संरक्षण और संतुलन का जिम्मा अपने कंधों पर लेना होगा।

तो हे मानव, मत जल को तू व्यर्थ कर।
कहीं तरसे न तू बूंद-बूंद को इक्कीसवीं सदी में जाकर।।
मत कर प्रदूषित तू अनमोल जल को,
मत बना विषैला अपने आने वाले कल को,
दूषित कर जल को न तू पर्यावरण का नाश कर,
अपने उसूलों, कामों में तू सुधार कर,
तब एक बेहतर, स्वस्थ कल की आस कर,
जल और पर्यावरण से सच्चा प्यार कर,
और इस तरह अस्तित्व को अपने हर खतरे से आजाद कर।

*****